- पशुशाला में कीटों की संख्या पर काबू करने के उपाय करने चाहिए, मुख्यतः मच्छर, मक्खी, पिस्सू और चिंचडी का उचित प्रबंध करना चाहिए।
- रोगी पशुओं की जांच और इलाज में उपयोग हुए सामान को खुले में नहीं फेंकना चाहिए।
- अगर अपने पशुशाला पर या आसपास किसी असाधारण लक्षण वाले पशु को देखते हैं, तो तुरंत नजदीकी पशु अस्पताल में इसकी जानकारी देनी चाहिए।
- एक पशुशाला के श्रमिक को दुसरे पशुशाला में नहीं जाना चाहिए, इसके साथ ही पशुपालकों को भी अपने शरीर की साफ–सफाई पर भी ध्यान देना चाहिए।
- संक्रमित गायों द्वारा उत्पादित दूध को उपभोग से पहले पाश्चुरीकृत किया जाना चाहिए।

लम्पी त्वचा रोग के कारण मरने वाले मवेशियों का निपटान कैसे करें?

- अगर लम्पी त्वचा रोग से संक्रमित पशु की मौत हो जाती है, तो उसके मृत शरीर को सही तरीके से निपटान करना चाहिए ताकि ये बीमारी और ज्यादा न फैले।
- इसलिए पशु की मौत के बाद उसे जमीन में दफना देना चाहिए।
- यदि कोई पशु लम्बे समय तक लम्पी त्वचा रोग से ग्रस्त होने के बाद मर जाता है, तो उसे दूर ले जाकर गड्ढे में दबा देना चाहिए।

प्रशासनिक भवन

शैक्षणिक भवन

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

डॉ. एस.एस. सिंह

निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशालय

दूरभाष : +91–789746699

ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:

कुलपति

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2023/60

पशुओं में लम्पी त्वचा रोग (एलएसडी)

डॉ. प्रमोद कुमार सोनी

डॉ. वी.पी. सिंह

प्रसार शिक्षा निदेशालय

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

पशुओं में लम्पी त्वचा रोग (एलएसडी)

लम्पी त्वचा रोग क्या है?

लम्पी त्वचा रोग / ढेलेदार त्वचा रोग मवेशियों का एक विषाणु संक्रमण है। मूल रूप से अफ्रीका में पाया जाता है, लेकिन अब यह भारत सहित दुनिया के कई देशों में भी फैल गया है। ये रोग पॉक्स समूह के विषाणु द्वारा होता है। पशु स्वास्थ्य के लिए विश्व संगठन ने इस बीमारी को अधिसूचित किया है। ये विषाणु पशुओं की खाल पर संक्रमण फैलाते हैं। कीट–पतंगे इसके लिए रोगवाहक के रूप में काम करते हैं जो इस बीमारी को एक पशु से दूसरे में फैला देते हैं। मानव में अभी तक लम्पी विषाणु का संक्रमण नही देखा गया है।

लम्पी त्वचा रोग के लक्षण क्या है?

- इस रोग से पीड़ित पशुओं में तेज बुखार 105–107 डिग्री फारेनहाइट आता है।
- इस रोग में पशुओं की खाल में 2–5 सेंटीमीटर व्यास की गांठों बन जाति है, विशेष रूप से सिर, गर्दन, अंगों, थन और जननांगों के आसपास।
- फिर उनमें पस पड़ जाता है, घाव आखिर में खुजली वाली पपड़ी बन जाते हैं, जिस पर विषाणु महीनों तक बना रहता है।
- इसके अलावा, पशुओं की लसीका ग्रंथियों में सूजन आना, अत्यधिक लार आना और आंख आना, विषाणु के अन्य लक्षण हैं।
- कमजोर पशु इस बीमारी की ज्यादा चपेट में आ रहे हैं।
- गायों की विदेशी नस्लें जैसे जर्सी, देशी नस्लों की तुलना में कम प्रतिरक्षा के कारण लम्पी स्किन के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं।
- हालांकि, भैंस कम प्रभावित होती हैं क्योंकि उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बेहतर होती है।
- अब तक, मनुष्यों या यहां तक कि भेड़– बकरी को लम्पी त्वचा के हस्तांतरण का कोई मामला सामने नहीं आया है।
- प्रजनन के लिए उपयोग की जाने वाली गायों में गर्भवती गायों के गर्भपात के साथ–साथ स्थायी बाँझपन भी हो सकता है।

लम्पी त्वचा रोग एक पशु से दूसरे में कैसे फेलता है?

- यह विषाणु संक्रमित पशु से दूसरे पशुओं में फैलता है।
- ये बीमारी मक्खी–मच्छर, चारा के जरिए फैलती है।
- पशु भी एक राज्य से दूसरे राज्य तक आते–जाते रहते हैं, जिनसे ये बीमारी एक से दूसरे राज्य में भी फैल जाती है।

लम्पी संक्रमण का उपचार

- अभी तक इस बीमारी के लिए कोई विशेष इलाज उपलब्ध नहीं है, टीकाकरण ही रोकथम का प्रभावी तारीका है।
- पशुओं में बीमारी फैलने पर उन्हें प्रथक रखने की सलाह दी जाती है।
- लेकिन तेजी से ठीक होने के लिए इन्हें एंटी–बायोटिक दवा के साथ लक्षण के आधार पर उपचार किया जाना चाहिए।
- भारत में इस वायरस के लिए पशुओं को कैप्री पॉक्स का टीका दिया जा रहा है।
- स्वदेशी टीका (लंपी प्रो–वैक–इंड) भी लम्पी स्किन के खिलाफ विकसित किया जा चुका है।
- जानवरों में लम्पी त्वचा रोग के लक्षण दिखने पर तुरंत नजदीकी पशु चिकित्सालय से संपर्क करें।

लम्पी त्वचा रोग का नियंत्रण

- रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए, अगर पशुशाला में या नजदीक में किसी पशु में संक्रमण की जानकारी मिलती है, तो स्वस्थ पशु को हमेशा उनसे अलग रखना चाहिए।
- रोग के लक्षण दिखने वाले पशुओं को नहीं खरीदना चाहिए। मेला, मंडी और प्रदर्शनी में पशुओं को नहीं ले जाना चाहिए।